दिवाकर्ल तिरुपति शास्त्री (1872-1920) और चेल्लपल्लि वेंकटशास्त्री (1870-1950) दोनों कवि, नाटककार तथा सफल अनुवादक हैं। उन्होंने करीब एक सौ से अधिक पुस्तकें तेलुगु और संस्कृत में लिखी हैं। वे तेलुगु के प्रसिद्ध कवि हैं। उन दोनों का नाम मिलाकर उन्हें तिरुपति वेंकट कवुलु कहा जाता है। वे एक दूसरे की पूर्ति करते हैं।

वे अवधान कला में सक्षम हैं। उन्होंने तेलुगु कविता को मामूली जनता तक पहुँचाया है। वे साहित्यिक "समस्याओं" को तत्काल पूरा करते हैं। उच्च से उच्च तथा सामान्य से सामान्य बातें उनकी कथा तथा काव्य वस्तु रहती है।

वे एक दर्जन से ज्यादा नाटक लिख चुके है, वे नाटक आज भी रंगमंच पर प्रदर्शित होते हैं और इतने लोकप्रिय हैं कि जनता उन नाटकों को देखने हर हमेशा तयार रहती है। इन्हों ने तेलुगु नाटक साहित्य को नयी दिशा दी है। आज भी 400 तक परिवार इनके नाटकों का प्रदर्शन करके अपनी जीविका चलाते हैं। तिरुपति वेंकट कवुलु ने कालिदास, रवींद्रनाथ ठाकूर जैसे महान कवियों की कृतियों का तेलुगु में अनुवाद प्रस्तुत किया है।

साल्व कृष्ण मूर्ति प्रेसिडेन्सी कालिज, मद्रास के तेलुगु आचार्य हैं। इस पुस्तक के द्वारा तेलुगु से अनभिज्ञ विद्वानों को तिरुपति वेंकट कवुलु से परिचित कराने का सुंदर प्रयास किया गया है।

Tirupati Venkata Kavulu (Hindi), Rs. 15
ISBN 81–7201–314–0

साल्व कृष्णमूर्ति

तिरुपति वेंकट कवुलु

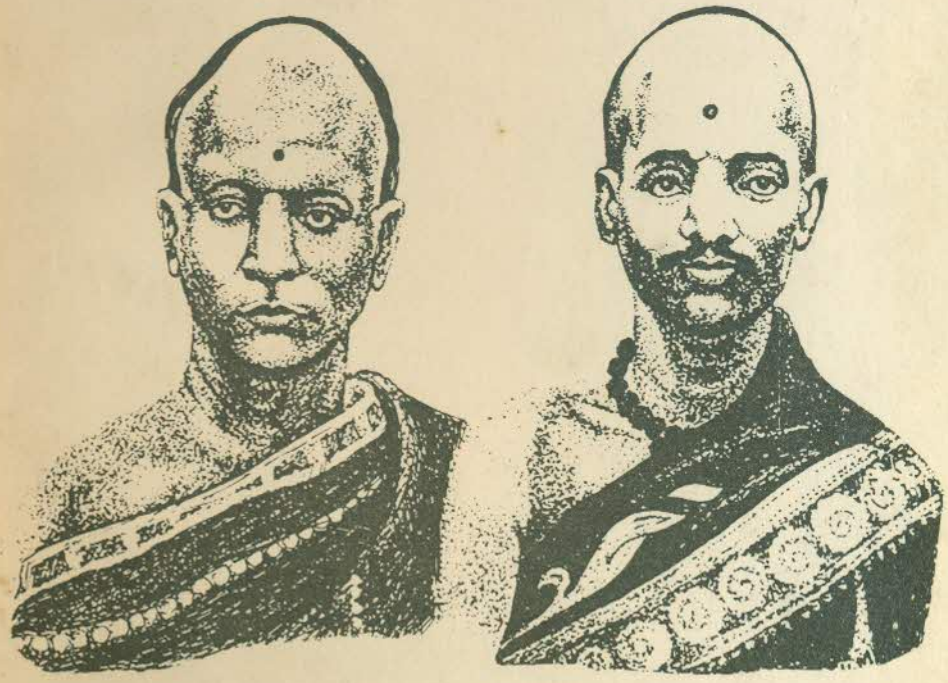

भारतीय साहित्य के निर्माता

तिरुपति वेंकट कवुलु

अस्तर पर मूर्तिकला के प्रतिरूप में राजा शुद्धोदन के दरबार का वह दृश्य छपा है, जिसमें तीन भविष्यवक्ता भगवान बुद्ध की माँ– रानी माया के स्वप्न की व्याख्या कर रहे हैं। उनके नीचे बैठा है मुंशी जो व्याख्या का दस्तावेज लिख रहा है। भारत में लेखन–कला का संभवतः सबसे प्राचीन और चित्रलिखित अभिलेख है।

नागार्जुनकोण्डा, दूसरी सदी ई०
सौजन्य : राष्ट्रीय संग्रहालय, नयी दिल्ली

भारतीय साहित्य के निर्माता

तिरुपति वेंकट कवुलु

लेखक
साल्व कृष्णमूर्ति
अनुवादक
वे. आंजनेय शर्मा

साहित्य अकादेमी

Tirupati Venkata Kavulu (तिरुपति वेंकट कवुलु):
Hindi translation by V. Anjaneya Sharma of
S. Krishnamurth's Monograph in English
Sahitya Akademi, New Delhi (1992), Rs. 15

© साहित्य अकादेमी

प्रथम संस्करण : 1992

प्रकाशक
साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय
रवींद्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नयी दिल्ली 110 001

विक्रय विभाग
'स्वाती', मन्दिर मार्ग, नयी दिल्ली 110 001

क्षेत्रीय कार्यालय
172, मुम्बई मराठी ग्रन्थ संग्रहालय मार्ग, दादर, बम्बई 400 014
जीवनतारा, 23A/44X, डायमंड हार्बर रोड, कलकत्ता 700 053
गुना, 304-305, अन्ना सलाई, तेनामपेठ, मद्रास 600 018
ए.डी.ए. रंगमंदिर, 109 जे.सी. रोड, बैंगलोर 560 002

ISBN 81–7201–314–0

मुद्रक
फाईन प्रिंटस्
21, यशश्री पूर्ती
30/1/1 एरंडवणे
पुणे 411 004

मूल्य 15 रुपये

विषय-सूची

1. तिरुपति वेंकट कवुलु 1
2. दिवाकर्ल तिरुपति शास्त्री 4
3. चेल्लपिल्ल वेंकट शास्त्री 7
4. अवधानम 12
5. महाराजा, राजा और जमीन्दार 20
6. कृतियाँ 23
7. कविता से अनुप्राणित मानवता 29
8. समापन 36
9. परिशिष्ट 38
10. ग्रंथ-सूची 40

1.
तिरूपति वेंकट कवुलु

उन्नीसवीं सदी का अंतिम चरण था। भारत में अंग्रेजों का शासन था। सारा भारत पुनरूत्थान के स्वप्न देख रहा था। सारा देश संघर्ष में था। सामाजिक, साहित्यक तथा राजनैतिक विकास के कार्य में देश के नेता लगे हुए थे। देश भर में अंग्रेंजी शिक्षा प्रबल थी। फलस्वरूप लोगों में साहित्यक तथा सामाजिक मामलों में उदार दृष्टि आ गयी थी । नेता सभी मामलों में उदारता के साथ विचार करने तथा उन विचारों को अमल में लाने की इच्छा रखते थे । नयी हवा के कारण जनता में राजनैतिक चेतनता भी उत्पन्न हुई थी। इन सभी बातों के फलस्वरूप गाँधी जी के नेतृत्व में राष्ट्रीय आंदोलन भी छिड गया था ।

उस समय आंध्र प्रदेश मद्रास प्रेसिडेन्सी के शासन के अंतर्गत था। आंध्र की स्थिति अन्य राज्यों की तरह निराशाजनक थी । अग्रेंजी शिक्षा के प्रचार के बावजूद भी सामाजिक तथा सांस्कृतिक मूल्य पतनोन्मुखी थे । संस्थान और जमीन्दारी के नाम से छोटी छोटी अनेक रियासतों के अधिकारी साहित्य के प्रेमी जरूर थे । संस्थानों में संस्कृत का बडा आदर था। देश भाषाओं के प्रति उपेक्षा की भावना थी । जो तेलुगु साहित्य कृष्ण देवराय के समय में सर्वोच्च शिखर पर था, वह शिथिल सा दीखने लगा था। 17,18 सदी में नायक राजाओं ने तेलुगु साहित्य का झंडा जरूर फहराया था, पर उनका क्षोत्र आंध्र से बाहर बहुत दूर था । लोगों के सामने कोई लक्ष्य न था । नवीनता न थी। विचार रूढ से बने थे। सारे देश की यही स्थिति थी ।

इस स्थिति में भी नयी हवा बहने लगी थी। वह हवा पुररूत्थान की थी। तब तक दो विभूतियाँ तेलुगु देश में उभरी थीं। इनके प्रयत्न से दो धाराएँ विकसित हुई थीं। एक विभूति के रूप में महान समाज सुधारक, बहुग्रंथ लेखक कंदुकूरि वीरेश लिंगम पंतुलु उभरे थे। दूसरी विभूति के रूप में गिडुगु राममूर्ति पंतुलु जी थे। राम मूर्ति पंतुलु जी ने जनता की बोलचाल की भाषा में साहित्य निर्माण का आंदोलन चलाया था। इन दोनों विभूतियों ने भाषा तथा साहित्य के क्षेत्र में बहुत बडा संघर्ष किया, और उसमें पूर्ण रूप से सफल रहे।

उन्हीं दिनों में तिरूपति वेंकट कवुलु भी साहित्य के क्षेत्र में आये। उन दोनों कवियों ने नाटक तथा कविता के क्षेत्र में अदभुत कार्य किया। यह कहना सर्वथा उचित होगा

कि उन दोनों ने साहित्य के क्षेत्र में सारे आंध्र में अपना शासन चलाया था। राज्य किया था। वे कविता साम्राज्य के अधिपति रहे। दिवाकर्ल तिरूपति शास्त्री (1872-1920) और चेल्लपिल्ल वेंकट शास्त्री (1870-1950) दोनों मिलकर कविता करते थे। वे द्वंद्व कवि या कविद्वय कहलाते थे। दोनों मिलकर तिरूपति वेंकट कवि बन गये थे। वे शरीर से दो थे, पर अंतरंग से एक ही थे। वे संस्कृत तथा तेलुगु के प्रकांडपंडित थे।

वे दोनों व्यवहार कुशलभी थे। स्वभाव से अच्छे थे। महा कवि थे। उन के हाथों में तेलुगु कविता ने अपनी रूढ परंपराओं से, परंपरागत शैली से भी अपने को मुक्त किया। उनके हाथों में नाटक ने नया ही रूप धारण किया। वे अपने को सुधारवादी नहीं मानते थे, पर उनके हाथों में नाटक तथा कविता के क्षेत्र में जो सुधार हुआ, जो नयी शैली बनी उससे सारी जनता अभिभूत सी हुई थी। वे सच्चे माने में कवि थे। कविता को जनता जनार्दन तक पहुँचाना उनका एकमात्र लक्ष्य था। उनकी कविता सब की समझ में आती थी। हजारों लोगों की जबान पर चढ गयी थी। उन के पद्य गाँव गाँव में पहुँच गये थे। वे 'अवधानम कला'में निष्णात थे। इस से भी बढकर यह बडी बात हुई कि छंदोबद्ध कविता भी लोग समझने लग गये थे। 1890 से 1920 तक इन कवियोंने सारे आंध्र में भ्रमण किया, अवधानम किये और हजारों कवियों को पैदा किया। जहाँ जहाँ वे गये, साहित्य की- कविता की -धारा बहने लगी थी। सारी आंध्रभूमि साहित्य की सुगंध से महकने लगी थी। कितने ही कवियों ने इन दोनों महा कवियों का अनुकरण किया था। कविता लिखी थी। उनके नाटक इतने प्रसिद्ध हुए कि गाँव गाँव तक पहुँच गयें। प्रत्येक तेलुगु भाषाभाषी की जबान पर चढ गये। सारांश यह कि उन दोनों ने तेलुगु कविता को नयी दिशा दी, नयी प्रेरणा दी। उनकी कृतियाँ सौ से अधिक हैं। संस्कृत की कई कृतिंयों का उन्होंने तेलुगु में अनुवाद किया। मौलिक काव्य लिखे, नाटक लिखे, व्यंग्य रचनायें की, जिन्हे अधिक्षेप काव्य कहा जाता है। आत्मकथा लिखी, यात्रा वृत्तांत लिखे, आलोचना ग्रंथ लिखे। ऐसी कोई विधा नहीं जिसमें उनकी कलम न चली हो। हिन्दू, बौद्ध तथा जैन पुराणों का अनुवाद कार्य भी उन्होंने किया।वे विश्वास करते थे, कई बार प्रकट भी कर चुके थे कि कविता के लिये ही उनका जन्म हुआ है। उन दिनों में बडे बडे कवि अपने को इन महा कवियों का शिष्य कहलाना गौरव की बात समझते थे। तिरूपति वेंकट कविद्वय रस को प्रधानता देते थे। बीसवीं सदी की कविता के वे जनक है। उनके अष्टावधानम के प्रमुख अंग "आकाशपुराण" से आत्माश्रयी कविता ने जन्म लिया था। वे उस कविता के प्रवर्तक हैं। उनकीं जातकचर्या' कृति ने तेलुगु कविता में एक नया अध्याय जोड दिया है।

परवर्ती तथा, आधुनिक कवियों पर इस कविता का बहुत असर पडा है। अनेक आत्माश्रयी कवि तेलुगु साहित्य में बाद पैदा हुए हैं। गरीबी में उनका जन्म हुआ।

जीवन से जूझकर संघर्ष कर उन्होनें उच्च से उच्च साहित्यक पुरस्कार प्राप्त किये। राजा-महाराजाओं से राजकवि भी घोषित हुए थे। इन दोनों कवियों की सफलतायें उनकी साहित्यक कृतियाँ आंध्र की जनता के लिये गौरव के चिन्ह बन गयी हैं।

2.
दिवाकर्ल तिरुपति शास्त्री

भगवान की इच्छा है या संयोग कहिये, दो जिलों के दिवाकर्ल तिरुपति शास्त्री और चेल्लपिल्ल वेंकट शास्त्री दोनों मिलकर तिरुपति वेंकट कवुलु बने है जो बालाजी भगवान का नाम है। वह नाम आंध्र में ही नहीं, सारे भारत में मशहूर है।

विद्यार्थी ज्ञान की गवेषणा में, गुरू की खोज करते है, और इधर उधर घूम फिरकर विद्यार्थी 12 बजे अपराह्न के समय झोली लेकर अन्न की भी भीख मांगते है। गृहिणियाँ थोडा थोडासा अन्न और व्यंजन झोली मे डालती है। तो उससे विद्यार्थियोका पेट भरता है। इसे मधुकरी वृत्ति कहते है। मधुकरी वृत्ति से पेट पालते थे। पतंजलि, महा भाष्यम आदि का अध्ययन करना उन कवियों के जीवन का आरंभिक कार्य था।

तिरुपति शास्त्री जी का जन्म पश्चिम गोदावरी जिले के एंडगंडि गाँव मे 1872 मार्च 26 को हुआ था। एंडगंडि भीमवरम तालूके में है। उनके माता पिता का नाम वेंकटावधानी और शेषम्मा है। पिताजी वैदिक विद्वान थे। सूर्य देवता के उपासक थे। माता अन्नदान के लिये मशहूर थीं। वे "वेलनाडु"शाखा के ब्राह्मण थे। वेलनाडु, ब्राह्मणों की एक उपशाखा है। तिरुपति शास्त्री उनके मातापिता की चौथी संतान है। जब वे बालक थे उनकी माता ने उन्हें आग से बचाया था। शास्त्री जी की प्रारंभिक शिक्षा बूर्ल सुब्बारायुडु की "वीथिवडि" गली की पाठशाला में हुई थी। सुब्बारायुडु जी संस्कृत के बडे विद्वान थे। वे वेंकटावधानी के भी गुरु थे। उसके बाद तिरुपति शास्त्री ने रघुवंशम तथा कुमार संभवम काव्यों का अध्ययन अपने पिता के आश्रय मे किया था। एक दिन तिरुपति शास्त्री जी पानी की एक दुर्घटना में फंस गये थे। उनके माता-पिता ने शास्त्री जी को पूरब गोदावरी जिले के गंगलकुर्रू गाँव में उनकी दूसरी मामी के पास भेज दिया था। मामी की अच्छी संपत्ति थी, फिर भी मामी ने मधुकरी वृत्ति का अवलंबन करने शास्त्री जी को प्रोत्साहित किया। मधुकरी वृत्ति से पेट पालते हुए गरिमेल्ल लिंगय्य शास्त्री के पास तिरुपति शास्त्री ने दो साल तक अध्ययन किया। तब तक भारवी कृत किरातार्जुनीयम तथा कुछ भाणों लघुनाटक का अध्ययन पूरा हुआ था। घर वापस आने के पहले पिप्पर में तिरुपति शास्त्री जी ने पम्मि पेरिशास्त्री के पास मुरारीद्वारा रचित अनर्घराघवम नाटक पूरा किया था। साथ साथ एक और विद्वान के पास न्याय बोधिनी (तर्क) का भी अध्ययन किया था। अनर्घराघवम के चार अंक पूरा होते होते शास्त्री

जी को मालूम हुआ कि षटदर्शन तथा व्याकरण के महा विद्वान चर्लब्रह्मय्य शास्त्री बनारस से अपने घर वापस आये हुए है और उन्होंने संस्कृत व्याकरण की पाठशाला भी आरंभ की है। व्याकरण पढने की इच्छा से शास्त्री "कडियेड्डा गॉव जाने तैयार हुए। ब्रह्मय्या शास्त्री जी माडभूषि वेंकटाचार्य जी का अवधानम देखने अपने शिष्यों के साथ पेंटपाडु गॉव आये थे। रास्ते में तिरुपति शास्त्री उनसे मिले थे।

तिरुपती शास्त्री ब्रह्मय्य शास्त्री के शिष्य बने। तब तक पाँच महीने पूरे हुए थे। लघुकौमुदी का अध्ययन कर रहे थे–तो चेलपिल्ल वेंकटशास्त्री जी भी वहाँ पहुँच गये। तिरुपति शास्त्री तर्क में पटु थे, वे कुशाग्र बुध्दि एवं मेधावी छात्र थे। अपने प्रत्यर्थियों को मिनिटों में तर्क में पराजित करते थे। अध्ययन के समय अपने गुरू से भी ऐसे प्रश्न पूछते थे-तो गुरू को जवाब देने में बहुत परेशानी होती थी। वेंकटशास्त्री कुछ भिन्न प्रकृति के थे। वे बडे चतुर थे, विद्वान भी थे। तिरुपतिशास्त्री से वे संतुष्ट न थे। स्वाभाविक है-दोनौं में प्रतिद्वंदिता भी आयी। सभी विद्यार्थी दो वर्गो में विभाजित हो गये थे। एक बार गुरू ने विद्यार्थियों को सलाह दी कि वे गणपति का उत्सव मनावें जिससे कि विद्यार्थियों का भला हो। उत्सव मनाने पैसे की जरूरत थी। तिरुपतिशास्त्री व्यावहारिकता में उतने पटु न थे। वेंकटशास्त्री तेलुगु में कविता लिखते थे और पौराणिक कथाओं का अच्छा वाचन करते थे। तो वेंकट शास्त्री तिरुपति शास्त्री दोनों मित्र बने। दोनों ने मिलकर गणपति नवरात्रि उत्सव को सुंदर ढंग से मनाया, काफी पैसा वसूल किया था। धीरे धीरे दोनों एक दूसरे को अच्छी तरह समझ गये, नजदीक आयें, पर दोनों तबतक अलग अलग ही कविता लिखते थे। 1890 के करीब ब्रह्मय्या शास्त्री ने अपनी पाठशाला "धवलेश्वरम" को बदल दी थी। विद्यार्थी भी गुरू के साथ धवलेश्वरम पहुँच गये। एक बार वेंकटशास्त्री एंडगंडि जा कर दिवाकर्ल तिरुपति शास्त्री के परिवार से भी मिलकर आये। उसके बाद वेंकट शास्त्री काशी गये, ब्रह्मय्य शास्त्री के अनुरोध पर फिर घर वापस आये। वेंकट शास्त्री तिरुपति शास्त्री फिर से साथी बने। तिरुपति शास्त्री जी की मृत्यु तक वे दोनों साथ ही रहे। दोनों मिलकर कविता लिखते थे। इतना ही नहीं द्वंद्वकवि भी बने। तब से उनका नाम तिरुपति वेंकट कवुलु हो गया।

काशी से वापस आने के बाद काशीयात्रा के लिये जो पैसा उधार में लिया गया था, उसे चुकाने के लिए वेंकट शास्त्री ने शतावधानम करना आरंभ किया। गुरू ने तिरुपति शास्त्री को भी साथ ले जाने की वेंकट शास्त्री को सलाह दी।

दोनों काकिनाडा पहुंचे। रास्ते में वेंकट शास्त्री ने शतावधानम के रहस्य तिरुपति शास्त्री को समझा दिये थे। दोनों ने मिलकर काकिनाडा में अवधानम बहुत सुंदर ढंग से किया। उस क्षण से वे दोनों और नजदीक आये। जीवनभर दोनों उसे निभाते रहे। तिरुपति शास्त्री वेंकट शास्त्री को उस क्षण से अपना गुरू भी मानने लगे थे। शतावधानम का कार्यक्रम और अध्ययन कार्य दोनों उनके साथ साथ चलते रहे। 1874 में तिरुपति शास्त्री की शादी हुई। तब तक दोनों कई शतावधानम कर चुके थे। धातुरत्नाकरम कृति